Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

सागर संभाग के औधोगिक विकास में सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की भूमिका का अध्ययन

Pankaj Kumar Singh*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

----------X----------

प्रस्तावना

इस शोध विषय के अध्ययन में सागर संभाग के छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़, दमोह व सागर जिलों में कई प्रकार के लघु मध्यम व बृहद आकार के उद्योग स्थापित हैं जो कई प्रकार की खनिज सम्पदाओं, वन सम्पदाओं, रसायन, पशु उत्पादन, आदि पर आधारित हैं। जिनका अध्ययन इस भोध में किया जायेगा एवं सागर संभाग के औद्योगिक विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं पंजाब नेशनल बैंक की भूमिका का अध्ययन किया जायेगा।

किसी भी अर्थ व्यवस्था के आर्थिक विकास को गति प्रदान करने में वित्त का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। वित्त की इस उपलब्धता को बनाये रखने में बैकिंग संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्यों कि बैकिंग संस्थाएँ ही अर्थव्यवस्था के उद्योग, कृशि, सेवा तथा व्यापार सभी क्षेत्रों के लिये आवश्यक पूंजी उपलब्ध करातीं हैं। बैंक जनता की बचतों को निक्षेप के रूप में जमा कर उनको उपयोगी क्षेत्रों में विनियोग करते हैं। जिससे देश में पूंजी का निर्माण होता है और देश के विकास में गतिशीलता आती है। राष्ट्रीयकरण से पूर्व बैकिंग कार्यप्रणाली ठीक इससे विपरीत थी। बैकिंग संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना था, सामाजिक विकास में उनकी कोई भूमिका नहीं थी। बैकिंग सुविधायें कुछ विशिश्ट वर्गों तक सीमित थी। लाभप्रद स्थानों पर ही शाखाएँ स्थापित की जाती थी। ग्रामीण क्षेत्र बैकिंग सुविधाओं से मीलों दूर थे, या यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण लोग बैंकों से परिचित ही नहीं थे। गांवों में सेठ–साहूकारों का प्रभुत्व था, जो आज भी कई ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जा सकता है। वर्तमान समय में सागर संभाग में निम्न सार्वजनिक क्षेत्र के राश्ट्रीयकृत बैंक कार्यरत हैं। जो सागर संभाग के औद्योगिक विकास में आवश्यक भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं :– स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब एंड सिंध बैंक, इलाहाबाद बैंक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, देना बैंक, सिंडिकेट बैंक, केनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, यूको बैंक, आंध्रा बैंक, इंडियन बैंक, कॉर्पोरेशन बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स, आदि।

जैसे :–

1. कृषि पर आधारित उद्योग :– सोया बड़ी, सोया पनीर, बेकरी, केचप, एम.जी. क्राफ्ट पेपर, सिवईंयां, मसाला उद्योग, बेसन, दलिया, मीठी सुपारी, रेबड़ी, गजक, नमकीन उत्पादन आदि।
2. वन संपदा पर आधारित उद्योग :– लकड़ी की कलात्मक, वस्तुएँ, फर्नीचर, खेलकूंद का सामान, विद्युत फिटिंग का सामान, दोना पत्तल, अगरबत्ती आदि।
3. खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योग :– स्टोन क्रेशर, कटिंग एंड, पॉलीशिंग ईकाई , खाद्, आर.सी.सी. सामान बनाने की ईकाई, ब्रिक्स ब्लॉक मिनरल्स, ग्राडिंग, ब्लीचिंग पावडर, एन.सी.आर. टाईल्स, हाइड्रेटेड लाईन आदि।
4. रसायन पर आधारित उद्योग :– पेट्रोकेमीकल पर आधारित अप एंड डाउन स्ट्रीट प्रोडक्ट, प्लास्टिक प्रोडक्ट, डिस्पोजल सीरीज, एफ.आर.पी. फर्नीचर, हर्बल भोम्पू, आयुर्वेदिक दवाईंया।
5. पशु उत्पादन पर आधारित उद्योग :– दुग्ध उत्पादन, चमड़ा उत्पादन, टेनरी खिलौना आदि।

शोध साहित्यों की समीक्षा

शर्मा, अनिल कुमार : (1982) ने अपने शोध प्रबंध ''सागर संभाग में औद्योगिक विकास की समस्याऐं एवं संभावनाऐं'' में स्पष्ट किया है कि संभाग का समुचित विकास करना है, तो संभाग में कृषि आधारित उद्योग, पशुपालन, मछली पालन, बागवानी, कुटीर उद्योग का विकास करना होगा, जो सागर संभाग में रोजगार के अवसर उपलब्ध करायेगा। संभाग के ग्रामों में उद्योग स्थापित किये जाने चाहिऐं एवं इनमें संभाग के युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने चाहियें। सागर संभाग की विशाल प्राकृतिक संपदा, उर्वराभूमि, परिश्रमी श्रमिक आदि एक प्रगतिशील औद्योगिकरण के बहुस्तरीय प्रयोजना विकास हेतु अच्छी पृष्ठभूमि प्रदान करें। जो कि शासकीय सहयोग द्वारा पूरा हो सकता है। एवं इसकी सहायता से संभाग का बहुस्तरीय विकास भी संभव होगा।

जैन, मनीष कुमार : (2004) ने अपने शोध प्रबंध ''सागर संभाग के औद्योगीकरण में जिला उद्योग केन्द्रों की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन'' में स्पष्ट किया है कि जिला उद्योग

www.ignited.in

केन्द्रों में जिला स्तर पर औद्योगीकरण की कार्य प्रणालियों की व्यवस्था सुधार हेतु आवश्यक परिवर्तन किये जाने चाहिये। जिला उद्योग केन्द्रों की पहुँच सभी ग्रामों तक संभव नहीं होती अतः ऐंसी योजनायें बनानी चाहिये जो विकासखंड स्तर पर भी व्यवस्थित ढंग से कार्य करें। जिला उद्योग केन्द्र नये औद्योगिक पर्यावरण के निर्माण में सहयोगी अवश्य हुए है, किन्तु ग्रामीण संसाधनों का संपूर्ण उपयोग अभी संभव नहीं हो पाया, अतः वर्तमान में भी ऐंसे सतत् प्रयासों की आवश्यकता है, जिससे संभाग का विकास संभव हो।

इस शोध विषय के अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएं इस प्रकार हैं–

- सागर संभाग के औद्योगिक विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की भूमिका में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- सागर संभाग के औद्योगिक विकास में पंजाब नेशनल बैंक की भूमिका में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- सागर संभाग के औद्योगिक विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की उपलब्धियों में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के उद्देश्य

- सागर संभा के औद्योगिक विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की भूमिका का अध्ययन करना।
- सागर संभाग के औद्योगिक विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सामने आने बाली समस्याओं का अध्ययन करना।
- सागर संभाग के औद्योगिक विकास में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं पंजाब नेशनल बैंक की उपलब्धियों का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध से अपेक्षित परिणाम

प्रस्तुत भोध कार्य सागर संभाग के विकास में सार्वजनिक बैंकों की भूमिका को प्रस्तुत करता है, यह अध्ययन बैंको की ऋणनीति एवं कार्यप्रणाली के विभिन्न पक्षों पर भी विवरण प्रस्तुत करता है, जो सार्वजनिक बैंको के लिए भविष्य में उपयुक्त ऋणनीति एवं प्रभावी कार्यप्रणाली के निर्धारण में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह अध्ययन संभाग के प्रशासकों एवं नियोजकों के लिए भी एक दिशा निर्देश कर सकेगा। यदि सार्वजनिक बैंकों के प्रबंधकों तथा जिले के विकास अधिकारियों को इस प्रबंध का यदि कोई लाभ मिलता है तो भोधार्थी द्वारा किया गया शोध सार्थक समझा जायेगा।

- प्रस्तावित शोध अध्ययन से रोजगार के अवसरों को खोजने में मदद मिलेगी।
- सागर संभाग में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन एवं मानवीय श्रम का उचित उपयोग होगा।
- सागर संभाग में औद्योगीकरण के विकास में मदद मिलेगी।
- संभाग के आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।
- सार्वजनिक बैंकों की कार्यप्रणाली की कमी आयेगी।
- विभिन्न औघोगिक व वित्तीय संस्थाओं में आपेक्षित समन्वय स्थापित होगा।
- सार्वजनिक बैंकों द्वारा औद्योगिक ऋण सहायता संबंधी नीति में आवश्यक परिवर्तनों का अनुमान लगाया जा सकता है।

शोध ग्रंथावली

कुलश्रेष्ठ, आर.एस. (1980), निगमों का वित्तीय प्रबंध, साहित्य सदन आगरा

कोल, जी.डी.एच. (1974), द्रव्य, व्यापार और विनियोग, राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

गुप्ता, बी.एन. (1985–86), भारत में उद्योगो का संगठन, प्रबंध एवं वित्त, साहित्य भवन आगरा

गुप्ता, आर.सी. (1988), औद्योगिक अर्थशास्त्र, आगरा बुक स्टोर, आगरा

चतुर्वेदी, टी.एन. (1983), मुद्रा एवं बैंकिंग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

मामोरिया, चतुर्भुज जैन, एस.सी. (1978), भारत की आर्थिक समस्याऐं, साहित्य भवन, आगरा

मिश्रा, श्रीकान्त (1966), औद्योगिक अर्थशास्त्र, बीनस प्रकाशन कानपुर

मिश्रा, एस.के. (1983–84), मुद्रा एवं बैंकिंग, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं लोक वित्त श्री महावीर बुक डिपो दिल्ली

मेहता, डी.एस. (1984–85), भारतीय बैंकिंग, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर

शर्मा, दिनेशचन्द्र (1979), भारतीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ

शर्मा, हरिश्चन्द्र (1976), भारत में बैंक व्यवस्था, सोहन प्रिटिंग सर्विस, दिल्ली

Corresponding Author

Pankaj Kumar Singh*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

E-Mail – chintuman2004@gmail.com